17 मई 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जो स्वयं स्वभाव से पवित्र है, जिसे पवित्र होने की आवश्यकता नहीं, जो सदा से ही पवित्र है; उसके आश्रय से ही पवित्रता प्रकट होती है।

ह्न परमभाव प्र.नयचक्र, पृष्ठ-108

वर्ष : 33, अंक : 4 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मई (द्वितीय), 2010 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

गुरुदेवश्री की जन्म जयंती

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्म जयन्ती के अवसर पर दिनांक 9 मई को प्रात: एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

सभा की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई मंचासीन थे।

गोष्ठी में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित आध्यात्मिक सिद्धांतों को बताया। पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने अपने उद्बोधन में गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित जिनागम के सिद्धांतों को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करते हुये उन्हें अपने वर्तमान जीवन के लिये अत्यन्त उपयोगी बताया। डॉ. श्रेयांसजी ने कहा कि गुरुदेवश्री की शास्त्रों का अर्थ निकालने की अद्भुत शैली थी, उन्होंने हमें सिखाया है कि शास्त्रों का अर्थ कैसे निकाला जाता है।

इस अवसर पर पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ, डॉ. नीतेशजी शास्त्री जयपुर, श्री दिलीपभाई शाह एवं श्री निहालचन्दजी जैन ने गुरुदेवश्री से संबंधित अनेक संस्मरण सुनाये तथा उनके उपकार का स्मरण किया।

सभा का संचालन पण्डित भागचंदजी जैन ने तथा मंगलाचरण पण्डित प्रशांतजी मौ ने किया।

नवीनीकरण शिलान्यास

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित बाबूभाई मेहता स्मृति सभागृह के नवीनीकरण का कार्य श्री चन्द्रकान्त भाई मेहता जयपुर की ओर से कराया जा रहा है।

इस कार्य का विधिवत शुभारंभ वैशाख कृष्ण एकादशी रविवार, दिनांक 9 मई को किया गया।

इस अवसर पर टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, श्री निहालचन्दजी जैन-पीतल फैक्ट्री, श्री अजितकुमारजी तोतूका, श्री शांतिलालजी जैन, श्री मूलचन्दजी छाबड़ा, श्री अजितजी बंसल, आर्किटेक्ट एम.के. जैन के अतिरिक्त फैडरेशन की महानगर शाखा एवं महिला मण्डल के सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने एवं शिलान्यास विधि के कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

ज्ञातव्य है कि शिलान्यास के पूर्व अ. भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा त्रिमूर्ति जिनमंदिर पर पूजन का आयोजन किया गया।

वाशिम एवं शिरपुर में हीरक जयंती

१. वाशिम (महा.) : यहाँ महावीर भवन में दिनाँक १० अप्रैल को सकल दि.जैन समाज एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह मनाया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्रीषेण डोणगाँवकर (रिटायर्ड हाइकोर्ट जज) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री माणिकचंदजी बज मंचासीन थे।

इस अवसर पर श्री राजेन्द्रजी बड़जात्या ने डॉ. भारिल्ल द्वारा जीवन पर्यंत किये गये तत्त्वप्रचार-प्रसार का उल्लेख करते हुये सभा में उनका परिचय दिया।

तत्पश्चात् वाशिम की सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों, विभिन्न मंदिरों के अध्यक्षों एवं आसपास के गाँवों से आये हुये ७५ प्रतिनिधियों ने डॉ. भारिल्ल का शॉल एवं श्रीफल भेंटकर भावभीना अभिनन्दन किया।

इस प्रसंग पर जैन चेरिटेबल ट्रस्ट की महिलाओं द्वारा विशेषरूप से तैयार किया गया प्रशस्ति-पत्र डॉ.भारिल्ल को भेंट किया गया।

समारोह में अध्यक्ष महोदय सहित अनेक लोगों ने डॉ. भारिल्ल के योगदान की दिल खोलकर प्रशंसा की।

कार्यक्रम के पूर्व डॉ.भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर विशेष व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री रविजी बज एवं आभार प्रदर्शन श्री चंद्रशेखरजी उकलकर ने किया।

२. शिरपुर (महा.) : यहाँ दिनाँक ९ अप्रैल को श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ दि.जैन संस्थान द्वारा तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का सम्मान किया गया। इस अवसर पर मालेगाँव, रिसोड एवं आसपास के ७ गाँवों के प्रतिनिधियों ने शॉल ओढाकर एवं माल्यार्पण करके डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम में श्री माणिकचंदजी बज, श्री राजकुमारजी चवरे, श्री चंद्रशेखरजी उकलकर, श्री श्रीपालजी बिलाला एवं श्री मन्नाटकरजी विशेषरूप से उपस्थित थे।

अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में अनेक वर्षों से यहाँ चल रहे दिगम्बर-श्वेताम्बर विवाद का शीघ्र समाधान होने की भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनंतजी विश्वम्भर ने किया। **- संतोष पाटनी**

सम्पादकीय – 35

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–५०

पिछली गाथा ४९ में कह आये हैं कि – ''ज्ञान व आत्मा में अन्य मत मान्य समवाय सम्बन्ध नहीं है। अन्यमतों में एकमत ऐसा है जो मानता है कि 'आत्मा और ज्ञान भिन्न–भिन्न हैं, दोनों के बीच ऐसा समवाय सम्बन्ध है, जिससे दोनों में एकपने का व्यवहार होता है।'' इस गाथा में उक्त मान्यता का खण्डन कर आत्मा और ज्ञान में तादात्म्यसिद्ध सम्बन्ध बताया है।

अब इस गाथा में समवाय सम्बन्ध का स्वरूप समझाकर अन्यमत द्वारा मान्य आत्मा के साथ समवाय सम्बन्ध का निषेध करते हैं।

मूलगाथा इस प्रकार है –

समवत्ती समवाओ अपुधब्भूदो य अजुदसिद्धो य।
तम्हा दव्वगुणाणं, अजुदा सिद्धि त्ति णिद्दिट्ठा।।५०।।

(हरिगीत)

समवर्तिता या अयुतता अप्रथकत्व या समवाय है।
सब एक ही है – सिद्ध इससे अयुतता गुण–द्रव्य में।।50।।

आचार्य कुन्दकुन्ददेव इस गाथा में जैनमतानुसार समवाय शब्द का अर्थ समवर्तीपना करते हैं, समवर्तीपना ही समवाय है, वही अपृथक्पना और अयुतसिद्धपना है; इसलिए द्रव्य और गुणों की अयुतसिद्धि कही है। जैसा कि आत्मा और उसके गुणों में होता है, उनका यह संबंध अनादि–अनन्त तादात्म्यमय सहवृत्ति होने से अयुतसिद्ध है; किन्तु यह अन्यमत द्वारा मान्य पृथक् पदार्थों के समवाय संबंध की बात नहीं है। जैनमत के अनुसार तादात्म्य सम्बन्ध एक ही द्रव्य के गुणों में होता है, इसी का दूसरा नाम अयुतसिद्ध समवाय सम्बन्ध है।

जैनदर्शन के अनुसार द्रव्य व गुणों के कभी भी पृथक्पना नहीं होता। इसलिए द्रव्य व गुणों में अयुतसिद्धि है, युतसिद्ध सम्बन्ध नहीं है।

टीका में आचार्य अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि द्रव्य व गुण एक अस्तित्व से रचित हैं; इसलिए उनकी अनादि–अनंत सहवृत्ति ही समवर्तीपना है। समवाय में पदार्थान्तरितपना नहीं है। यहाँ गुण–गुणी में एक भाव के बिना और किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। द्रव्य और गुणों के एक अस्तित्वमय अनादि–अनन्त धारावाही रूप प्रवृत्ति का नाम ही जिनमत में समवाय है।

तात्पर्य यह है कि मूलतः सम्बन्ध के दो प्रकार हैं; एक संयोग सम्बन्ध और दूसरा समवाय सम्बन्ध। जैसे जीव और उसके गुणों का सम्बन्ध भावों या गुणों का एक अस्तित्वमय होता है। जैसे गुण–गुणी में गुणों के नाश होने पर गुणी का नाश और गुणी के नाश होने पर गुणों का नाश होता है, वही प्रदेशभेद रहित गुण–गुणी का सम्बन्ध समवाय सम्बन्ध है। यद्यपि संज्ञा, संख्या, लक्षण, प्रयोजनादि से गुण–गुणी में भेद हैं; तथापि प्रदेशों की अपेक्षा गुण–गुणी में एकता है।

संज्ञा आदि के भेद होने पर भी वस्तुरूप से अभेद होने से अपृथक्पना है, यही अयुतसिद्धपना है; इसलिए अनादि–अनन्त सहवृत्ति है। द्रव्य व गुणों में ऐसा समवाय होने से अयुतसिद्धि है, अनादि–अनन्त तादात्म्यमय वृत्ति होने से उन्हें अयुतसिद्धि है; कभी भी पृथक्पना नहीं है।

कवि हीरानन्दजी इसी बात को अपनी काव्य की भाषा में कहते हैं, जो इसप्रकार है –

(दोहा)

समवरती समवाय है, अप्रथक् नहिं जुदसिद्ध।
तातैं दर्वगुनौ विषैं, अजुतसिद्ध की वृद्धि।।२६२।।

(सवैया इकतीसा)

द्रव्य–गुण एक अस्ति का स्वरूप लसै,
आदि – अंत बिना सोई सहवृत्ति धारै है।
समवरती कहावै समवाय जैन ग्रन्थ,
संख्या आदि भेद तातैं वस्तु एक सारे हैं।।
दोऊ अप्रथक् भूत जुदी अस्ति कोई नाहिं,
यातैं अजुत सिद्ध जुतता विडारै है।
तातैं सर्वगुण माहिं ए विसेष सगरै हैं,
जैनी समकिती जीव नीकै कै विचारे हैं।।२६३।।

(दोहा)

समवरती समवाय है, कहत सयाने लोग।
ते अयान जानै नहीं, जिन हिय मिथ्या रोग।।२६४।।

जैन सम्यग्दृष्टि ज्ञानी आत्मा भले प्रकार विचारते हैं कि – द्रव्य गुण एक अस्तित्वमय हैं। अनादि–अनन्त सहवृत्ति के धारक हैं। वस्तु में संज्ञा, संख्या आदि भेद होते हुए भी एक हैं। द्रव्य व गुण दोनों अपृथक्भूत हैं। इस कारण उनमें युतसिद्ध सम्बन्ध नहीं है।

दोहा नं. २६२ के कथन का तात्पर्य यह है कि – समवर्ती, समवाय और अपृथक् तथा अयुतसिद्ध एकार्थ वाचक शब्द हैं; इसलिए अपृथक् द्रव्य व गुण में अयुतसिद्ध सम्बन्ध कह सकते हैं। तथा उपर्युक्त सवैया २६३ में भी यही भाव व्यक्त किया है, वहाँ कहा है कि – द्रव्य व गुण एक ही अस्तित्व में रहते हैं। आदि–अंत के बिना सहवृत्ति को धारण किए हैं। जैन ग्रन्थों में समवर्ती को ही समवाय कहा है। संज्ञा, संख्या आदि के भेद होने पर कोई भिन्न वस्तु नहीं है। इसकारण अयुतसिद्ध है।

अन्यमत में गुण–गुणी को जुदा कहा है। वे कहते हैं कि गुण बाद में आकर आत्मा से मिलते हैं; वे समवाय संबंध का ऐसा स्वरूप मानते हैं कि पहले आत्मा में गुण नहीं थे, आत्मा से गुणों का समवाय सम्बन्ध बाद में हुआ है।

श्री कानजीस्वामी समवाय के स्वरूप को समझाते हुए कहते हैं कि – सभी द्रव्यों में समवाय है, द्रव्य व गुणों के एक अस्तित्व के रूप में अनादि–अनन्त धारावाही रूप प्रवृत्ति का नाम जिनमत में समवाय है। वे आत्मा का ही दृष्टान्त देकर बताते हैं कि – आत्मा वस्तु है, उसमें ज्ञान, आनन्द, वीर्य, स्वच्छत्व, प्रभुत्व आदि अनन्तगुण हैं। उनकी अनादि–अनन्त धारावाही प्रवृत्ति को समवाय सम्बन्ध कहते हैं। निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध अथवा

संयोग सम्बन्ध दो द्रव्यों की पृथकता बतलाते हैं। आत्मा एवं उसके गुणों में संयोग सम्बन्ध नहीं है; किन्तु समवाय अथवा तादात्म्य सम्बन्ध है।

अन्यमत में गुण–गुणी को भिन्न कहा तथा वे बाद में मिलते हैं – ऐसा कहकर वे उससे मिलने को समवाय सम्बन्ध कहते हैं; किन्तु उनका यह कथन यथार्थ नहीं है। अनादि–अनन्त आत्मा में गुण एकरूप तादात्म्य भाव से हैं। जैनमत में उसे ही समवाय सम्बन्ध कहते हैं।

गुरुदेव श्री के कथन का सारांश यह है कि – संबंध दो प्रकार का होता है – (१) संयोग सम्बन्ध अथवा निमित्त–नैमित्तिक संबंध। (२) समवाय सम्बन्ध या तादात्म्य सम्बन्ध। जब द्रव्य का भाव, द्रव्य के अनन्त गुणों का भाव, अनन्त पर्यायों का भाव – इस प्रकार जहाँ अनेक भाव एकरूप होते हैं, उसे ही जिनमत में समवाय सम्बन्ध या तादात्म्य कहते हैं। अन्यमत द्वारा माना गया समवाय संबंध यथार्थ नहीं है। ●

गाथा– ५१–५२

पिछली गाथा में कह आये हैं कि – जहाँ अनेक भाव एक रूप होते हैं, उसे ही समवाय सम्बन्ध या तादात्म्य सम्बन्ध कहते हैं; वही अपृथकपना है, अयुतसिद्ध सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध एक ही द्रव्य के गुणों में होता है।

अब इस गाथा में कहते हैं कि यद्यपि वर्ण आदि पुद्गल के बीस गुण परमाणु से अपृथक् हैं; तथापि कथन विशेष से उनमें अन्यत्व भी है –

मूलगाथा इस प्रकार है –

वण्णरसगंधफासा परमाणुपरूविदा विसेसेहिं।
दव्वादो य अणण्णा अण्णत्तपगासगा होंति ।।५१।।
दंसणणाणाणि तहा जीवणिबद्धाणि णण्णभूदाणि।
ववदेसदो पुधत्तं कुव्वंति हि णो सभावादो ।।५२।।

(हरिगीत)

ज्यों वर्ण आदिक बीस गुण परमाणु से अप्रथक हैं।
विशेष के व्यपदेश से वे अन्यत्व को द्योतित करें।।51।।
त्यों जीव से संबद्ध दर्शन–ज्ञान जीव अनन्य हैं।
विशेष के व्यपदेश से वे अन्यत्व को घोषित करें।।52।।

प्रस्तुत गाथाओं में आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि परमाणु में प्ररूपित किए जाने वाले वर्ण–रस–गंध–स्पर्श द्रव्य से अनन्य वर्तते हुए विशेषों द्वारा अन्यत्व को प्रकाशित करते हैं; परन्तु वे वर्ण आदि स्वभाव से अन्यरूप नहीं हैं तथा जीव में निबद्ध दर्शन–ज्ञान अनन्यवर्तते हुए कथन द्वारा पृथक्त्व को दर्शाते हैं, स्वभाव से पृथक् नहीं है।

इसी बात का स्पष्टीकरण करते हुए आचार्य अमृतचन्द्र अपनी समय व्याख्या टीका में कहते हैं कि – 'स्पर्श–रस–गंध–वर्ण वास्तव में परमाणु के प्ररूपित किए जाते हैं, दर्शाये जाते हैं। वे वर्ण आदि परमाणु से अभिन्न प्रदेश वाले होने के कारण अभिन्न (अनन्य) होने पर भी संज्ञा, संख्या आदि रूप से कथन करने के कारण विशेषों द्वारा अन्यत्व (भिन्नता) को प्रकाशित करते हैं, दर्शाते हैं। इसप्रकार आत्मा से सम्बद्ध ज्ञान–दर्शन भी आत्मद्रव्य से अभिन्न प्रदेशी होने के कारण उनसे अनन्य (एकरूप) होने पर भी, संज्ञा, संख्या आदि कथन के कारणपने के कारण विशेषों द्वारा पृथकता को प्राप्त होते हैं; परन्तु स्वभाव से सदैव अपृथकपने को ही धारण करते हैं।

आचार्य जयसेन इस गाथा की तात्पर्यवृत्ति टीका में दृष्टान्त सहित गुण–गुणी में कथंचित अभेद बताते हुए उनकी एकता का कथन करते हैं। वे कहते हैं कि – निश्चयनय की अपेक्षा से परमाणुओं में कहे गये वर्ण–रस–गन्ध–स्पर्श गुण प्रदेशों की अपेक्षा पुद्गल द्रव्य से पृथक नहीं हैं और ये ही चारों वर्णादि गुण व्यवहार की अपेक्षा संज्ञा, संख्या आदि भेदों से पृथक्त्व को भी प्रगट करते हैं।

कवि हीरानन्दजी अपनी काव्य शैली में कहते हैं कि –

(दोहा)

परस वरन रस गन्ध ए, पुद्गल दरब विशेष।
दरब माहिं जु अनन्य है, अन्य प्रकाशक देख।।२६५।।
दरसन–ज्ञान तथा लसै, जीव अनन्य सुभाव।
प्रथक्भाव व्यपदेस तैं, निजतैं नहिं प्रकटाव।।२६६।।

(सवैया इकतीसा)

रूपरस–गन्ध–फास, पुद्गलानुरूपी हैं,
एक अविभक्त परदेस तैं कहाये हैं।
अनु सो अनन्य संज्ञा व्यपदेस सेती अन्य,
अन्य परकार तातैं ताही में लहाये हैं।।
ऐसैं ही ज्ञान दर्शन सुभाव आत्मा है,
आप तैं अनन्य देस एकता दिखाये हैं।।
व्यपदेस आदि भेद तातैं भेदसा दिखाये हैं,
देस भेद बिना दौनौं जिननें बताये हैं।।२६७।।

(दोहा)

जीव दरव गुन कहै दरसन ग्यान अनन्य।
भेदभाव विवहार मैं बरतै भेद अगम्य।।२६८।।

उपर्युक्त छंदों में कहा है कि स्पर्श, रस, गंध, वर्ण – ये सब पुद्गल द्रव्य की पर्यायें हैं। ये पुद्गल द्रव्य में अनन्यभाव से विद्यमान हैं। दर्शन–ज्ञान – ये जीव के अनन्य स्वभाव हैं। कथन की अपेक्षा इनमें संज्ञा, संख्या आदि भेद हैं; परन्तु ये निज स्वभाव से पृथक् नहीं है।

इसी प्रकार आत्मा का स्वभाव ज्ञान दर्शन है और ये गुण भी आत्म द्रव्य से अनन्य हैं। कथन की अपेक्षा इनमें संज्ञा, संख्या आदि भेद हैं; परन्तु आत्म वस्तु अभेद है – ऐसा जिनेन्द्र देव ने कहा है।

दोहा २६८ में कहते हैं कि दर्शन–ज्ञान जीव द्रव्य के गुण हैं और वे जीव से अनन्य हैं। गुण भेदादि अनगिनत हैं, जो व्यवहार से कहे जाते हैं।

इसी भाव को दर्शाते हुए श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि – सर्वज्ञ भगवान का मत अनेकान्त है, जो दोनों नयों से सिद्ध होता है; इसलिए निश्चय–व्यवहार, भेद–अभेद, गुण–गुणी का विशेष स्वरूप परमागम से जानने योग्य है।

आत्मा दर्शन पर्याय से देखता है एवं ज्ञान पर्याय से जानता है – ऐसा भेद करना व्यवहार है।

अब कहते हैं कि – आत्मद्रव्य सहज, शुद्ध, चेतन, पारिणामिक भावों से युक्त अनादि–अनंत है। स्वाभाविकभाव की अपेक्षा जीव तीनों कालों में टंकोत्कीर्ण अविनाशी है और उदय, क्षयोपशम व उपशम भावों की अपेक्षा सादि–सांत है। ●

आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमिनार

मुम्बई : दिव्यध्वनि प्रचार–प्रसार ट्रस्ट द्वारा आयोजित **आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग : तृतीय सेमिनार** दिनाँक 18 अप्रैल को नानावटी अस्पताल के सभागृह में सम्पन्न हुआ।

श्रीमती स्वानुभूति जैन के कुशल संचालन में संपन्न इस आध्यात्मिक सेमिनार का प्रारंभ श्रीमती ज्योति गाला के मङ्गलाचरण से हुआ। श्री अविनाशकुमारजी टडैया ने ट्रस्ट की गतिविधियों पर प्रकाश डाला ।

श्रीमती शुद्धात्मप्रभाजी टडैया ने **तनाव** को काल के आधार पर बहुत सरल शैली में समझाते हुये कहा कि हम भूतकाल व भविष्यकाल की सबसे अधिक चिंता करते हैं, जो कि पूर्णत: व्यर्थ ही साबित होती है; क्योंकि भूतकाल तो बीत गया, भविष्य अभी है नहीं एवं वर्तमान सिर्फ एक समय का होता है; अत: जब हम इस तथ्य को भलीभांति समझेंगे तभी तनाव को समाप्त कर सच्चे सुख की प्राप्ति कर सकेंगे ।

श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कर्तृत्त्व की आकुलता को दु:ख का कारण बताते हुये कर्त्ताभाव का अभाव करके सुखी होने की बात कही।

श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि पूर्ण स्वीकार्यता (Total Acceptable)अर्थात् जो जिस रूप में है, उसे वैसे ही बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार करके हम सुख शांति की प्राप्ति कर सकते हैं। समस्या या दु:ख का कारण हमारे स्वयं में है, लोगों में नहीं; अत: दृष्टिकोण बदलकर, क्रमबद्धपर्याय को स्वीकार करके ही व्यर्थ के तनाव को दूर कर सकते हैं।

श्रीमती स्वानुभूति जैन ने पुण्य–पाप के उदय का विचार कर एकमात्र वीतराग भाव धारण करके ही सच्चा सुख प्राप्त करने की बात कही।

सभा में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. विपिनजी दोशी उपस्थित थे।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का ह्न

31 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन देवलाली में

(बुधवार, दिनांक 26 मई 2010)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 31वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन देवलाली में आयोजित प्रशिक्षण शिविर के मध्य दिनांक 26 मई को आयोजित किया जा रहा है। अधिवेशन के पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग 25 मई को आयोजित की गई है, जिसमें फैडरेशन द्वारा अभी तक किये गये कार्यों की समीक्षा एवं आगामी कार्यक्रमों की योजना पर विचार किया जायेगा।

अधिवेशन में दिनांक 26 मई को सभी शाखाओं के अधिक से अधिक सदस्यों को उपस्थित होना है। शाखायें कम से कम 2 प्रतिनिधि अवश्य भेजें।

कार्यक्रम स्थल – पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड़, बेलतगाँव रास्ता, देवलाली–नासिक (महा.)

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में सेमिनार संपन्न

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय–अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ दिनाँक १७ व १८ अप्रैल को दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। सेमिनार का विषय **जीवनोपयोगी शुद्ध संस्कार विधि का स्वरूप** था।

इस सेमिनार में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित रतनलालजी बैनाड़ा आगरा, श्री प्रकाशदादा ज्योतिर्विद मैनपुरी, डॉ.एस.पी.शर्मा (संस्कृत विभागाध्यक्ष–अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय), श्री नरेन्द्रप्रकाशजी फिरोजाबाद, प्रो.अशोककुमारजी जैन रुड़की, ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, डॉ.राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री अलीगढ, प्रो.सुदीपजी जैन दिल्ली, डॉ.वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ.अनेकांतजी जैन दिल्ली, डॉ.योगेशजी जैन अलीगंज, श्री संजयकुमारजी जैन दौसा, डॉ.सतीशकुमारजी जैन अलीगढ, श्री जगदीशजी पंवार अलीगढ, डॉ.शुद्धात्मप्रकाशजी जैन अलीगढ, डॉ.ममताजी जैन बांसवाड़ा, सौ.स्वर्णलताजी जैन अलीगढ आदि अनेक विद्वानों का लाभ मिला।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.एस.सी.जैन ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी मंगलप्रज्ञाजी थीं तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में तीर्थङ्कर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के चैयरमैन श्री सुरेशचंदजी जैन मंचासीन थे।

इस सेमिनार में अहिंसक एवं अल्पारंभी संस्कार विधि का स्वरूप, पूजन आदि विधियों का स्वरूप, प्रतिष्ठा विधि का स्वरूप, वास्तु आदि विधियों के स्वरूप पर विस्तृत व गहन चर्चा हुई; इसमें लौकिक व धार्मिक दोनों प्रकार के संस्कारों को चर्चा का विषय बनाया गया।

इस कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में संस्कारों में आ रही अशुद्धता पर खेद प्रकट करते हुए कहा कि पंचकल्याणकों के अन्तर्गत बारातों का आयोजन और उनमें स्त्रियों एवं पुरुषों का नृत्य करना न सिर्फ असंगत है; बल्कि अशोभनीय भी है। संस्कारों को शुद्ध बनाने के लिये उन्होंने विचारों में आध्यात्मिकता के समावेश पर बल दिया।

अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रो.एस.पी.शर्मा ने संस्कारों के विषय में कहा कि संस्कार आत्मा के लिये नहीं; बल्कि सामाजिक जीवन के लिये है। संस्कारों का उपयोग धार्मिक अलगाव के लिये नहीं; अपितु धार्मिक सहअस्तित्व और सामंजस्य के लिये किया जाना चाहिये। मङ्गलायतन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.सतीशचंदजी जैन ने कहा कि संस्कार जीवन को अनुशासित करने का एक माध्यम है। विश्वविद्यालय के चैयरमैन श्री पवनजी जैन ने विश्वविद्यालय को सर्वश्रेष्ठ उन्नतिशील विश्वविद्यालय घोषित किये जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुये इसका पूरा श्रेय विश्वविद्यालय के कर्मचारियों, शिक्षकों एवं छात्रों को दिया।

सभा का संचालन डॉ.राकेशकुमारजी शास्त्री तथा मंगलाचरण श्री संयमजी जैन ने किया।

दिनाँक १८ अप्रैल को आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता महान शिक्षाविद् प्रो.के.पी.पाण्डेय, वाराणसी द्वारा की गई।

ग्रुप शिविर सानन्द संपन्न

अमरमऊ (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 22 से 29 अप्रैल तक श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के आयोजकत्व तथा श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल अमरमऊ के तत्त्वावधान में बुन्देलखण्ड के विभिन्न 25 स्थानों पर ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

दिनाँक 22 अप्रैल को शिविर का उद्घाटन श्री प्रमोदकुमारजी मोदी सागर ने तथा ध्वजारोहण श्री हुकुमचन्दजी जैन अमरमऊ ने किया।

इस शिविर में पण्डित नितिनजी खड़ैरी, पण्डित विवेकजी सागर, पण्डित अभिषेकजी जोगी गजपंथा, पण्डित राहुलजी दमोह, पण्डित राहुलजी नौगाँव, पण्डित मोहितजी नौगाँव, पण्डित विकासजी इंदौर, पण्डित विवेकजी मड़देवरा, पण्डित दीपकजी मड़देवरा, पण्डित मयंकजी अमरमऊ, पण्डित वीरेन्द्रजी बकस्वाहा, पण्डित आशीषजी मड़ावरा, पण्डित नवीनजी उज्जैन, पण्डित सुदीपजी अमरमऊ, पण्डित अनेकांतजी अमरमऊ, पण्डित विक्रांतजी भगवां, पण्डित विवेकजी अमरमऊ, पण्डित सचिनजी भगवां, पण्डित सनतजी बकस्वाहा एवं पण्डित सचिनजी सागर का प्रवचन, कक्षाओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से लाभ मिला।

शिविर का सामूहिक समापन 29 अप्रैल को श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर अमरमऊ में सम्पन्न हुआ, जिसमें शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई तथा विभिन्न स्थानों से आए हुये छात्रों को श्री सुखानन्दजी जैन शाहगढ की ओर से पुरस्कार दिये गये। शिविर में लगभग 1425 विद्यार्थियों तथा 750 साधर्मियों ने लाभ लिया। सम्पूर्ण शिविर पं. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर तथा पं. धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

इस शिविर के संयोजक पण्डित दीपेशजी शास्त्री अमरमऊ तथा पण्डित सौरभजी शास्त्री खड़ैरी थे।

सेलू में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयंती

सेलू (महा.) : यहाँ दिनाँक 10 मई, 2010 को सकल जैन समाज की ओर से तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री माणकचंदजी विनायक ने की। डॉ. भारिल्ल का परिचय श्री अशोकजी वानरे ने दिया।

इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने सेलू की संपूर्ण समाज की ओर से डॉ. भारिल्ल को श्रीफल एवं स्मृति चिह्न भेंटकर भावभीना अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम के पूर्व डॉ. भारिल्ल का **भगवान महावीर की अहिंसा** एवं **णमोकार महामंत्र** विषय पर बहुत सरल भाषा में प्रवचन का लाभ मिला।

कार्यक्रम का संचालन श्री सुभाषजी काला ने एवं मंगलाचरण श्री शिरीषजी सिंघई ने किया।

उज्ज्वल भविष्य की कामना !

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक श्री विक्रांत पाटनी पुत्र श्री हितेशकुमारजी पाटनी झालरापाटन का विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा आयोजित नेट–दिसम्बर 09 परीक्षा में जे.आर.एफ. हेतु चयन हो गया है।

ज्ञातव्य है कि आप शास्त्री एवं प्राकृत अपभ्रंश जैनागम में आचार्य हैं तथा वर्तमान में झालरापाटन में तीनों समय प्रवचन करते हैं।

महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

तृतीय शिक्षण शिविर संपन्न

मलाड (मुम्बई) : यहाँ एवरशाइन नगर में दिनाँक 14 से 18 अप्रैल, 2010 तक विशाल स्तर पर तृतीय बाल युवा धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री श्योपुर, पण्डित अश्विनभाई मलाड एवं पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी मुम्बई के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर में प्रतिदिन दोनों समय पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा नयचक्र की कक्षा अत्यंत सरल, सुबोध एवं रोचक शैली में ली गई, जिससे अनेक जिज्ञासुओं को नयों संबंधी शंकाओं का समाधान मिला। पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री ने छहढाला एवं पण्डित सौरभजी शास्त्री ने आत्मा–परमात्मा विषय पर कक्षा ली। पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल ने इन्द्रियाँ, प्रातिहार्य एवं कषाय विषय पर कक्षा ली। पण्डित राहुलजी शास्त्री ने जैनधर्म के मूल सिद्धांत सिखाये।

इस शिविर में बोरीवली, कांदीवली, जोगेश्वरी, मलाड, गोरेगांव व अन्य स्थानों से लगभग 500 साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

शिविर के मध्य धार्मिक चित्रकला प्रतियोगिता एवं जिनवाणी सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अन्तिम दिन परीक्षा लेकर विशेष योग्यता प्राप्त बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

सम्पूर्ण शिविर श्रीमती पूजा भारिल्ल के निर्देशन एवं संचालन में कु.वंदना जैन, कु. सपना जैन एवं कु. अणिमा जैन के सहयोग से सम्पन्न हुआ। **ह्न आर. के. जैन, मलाड**

शोक समाचार

१. शिवपुरी (म.प्र.) श्रीमती सुशीला धर्मपत्नी श्री धर्मचन्दजी बन्धु का दिनाँक 20 फरवरी को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थीं, अंतिम समय में आपके शिष्य पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, गुना संबोधन करने हेतु आये थे; परन्तु उनके संबोधन के पूर्व ही देहावसान हो गया था।

२. देहरादून (उत्तरांचल) निवासी श्री तरसपालजी जैन की माताजी का दिनाँक 10 फरवरी को 93 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग–विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 501/– रुपये प्राप्त हुये।

३. मुम्बई निवासी श्री कांतिलाजी हिरासा जैन (भुरे) का दिनाँक 30 मार्च को 74 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप विगत 50 वर्षों से मुम्बई के समाजसेवी एवं दानी व्यक्ति थे। ज्ञातव्य है कि आप महावीर ब्रह्मचर्याश्रम ट्रस्ट एवं कारंजा गुरुकुल के अध्यक्ष थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 201 /– रुपये प्राप्त हुये हैं।

४. भिण्ड (म.प्र.) निवासी श्री स्वरूपचंदजी जैन का दिनाँक ६ मई को ८५ वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। उनकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु १०१/– प्राप्त हुये हैं।

५. केशवरायपाटन–बूंदी (राज.) निवासी श्री आनन्दीलालजी जैन का दिनाँक 15 अप्रैल को 90 वर्ष की आयु में णमोकार मंत्र का पाठ सुनते हुये निर्मल परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग–विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 251/– रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही मुक्ति की प्राप्ति करें ह्न यही भावना है।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

52 तेरहवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

उक्त सूक्ष्म मिथ्यात्व की चर्चा आरंभ करते हुए पण्डितजी लिखते हैं कि **जिनागम में निश्चय-व्यवहाररूप वर्णन है। उनमें यथार्थ का नाम निश्चय और उपचार का नाम व्यवहार है। उक्त निश्चय-व्यवहार का स्वरूप सही रूप में न जान पाने के कारण उनकी मान्यता, वृत्ति और प्रवृत्ति में सम्यक्पना नहीं आ पाता।**

नयज्ञान की उपयोगिता निरूपित करते हुए धवला में कहा गया है -

णत्थि णएहिं विहूणं सुत्तं अत्थो व्व जिनवरमदम्हि।
तो णयवादे णिउणा मुणिणो सिद्धंतिया होंति।।[१]

जिनेन्द्र भगवान के मत में नयवाद के बिना सूत्र और अर्थ कुछ भी नहीं कहा गया है। इसलिए जो मुनि नयवाद में निपुण होते हैं; उन्हें सच्चे सिद्धान्त के ज्ञाता समझना चाहिए।''

नयचक्रकार माइल्लधवल तो यहाँ तक लिखते हैं कि -

जे णयदिट्ठिविहीणा ताण ण वत्थूसहाव उवलद्धि।
वत्थुसहावविहूणा सम्मादिट्ठि कहं हुंति।।[२]

जो व्यक्ति नयदृष्टि से विहीन हैं; उन्हें वस्तुस्वरूप का ज्ञान नहीं हो सकता और वस्तुस्वरूप को न जाननेवाले सम्यग्दृष्टि कैसे हो सकते हैं ?''

जो लोग निश्चय-व्यवहार नयों का सही स्वरूप नहीं समझ पाते; वे या तो निश्चयाभासी हो जाते हैं या फिर व्यवहाराभासी। निश्चय-व्यवहार नयों का सही स्वरूप न जानने और दोनों को स्वीकार करने की भावना रखनेवाले कुछ लोग उभयाभासी हो जाते हैं।

इसप्रकार हम निश्चय-व्यवहार के स्वरूप से अनभिज्ञ लोगों को तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं - १. निश्चयाभासी मिथ्यादृष्टि, २. व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि और ३. उभयाभासी मिथ्यादृष्टि।

उक्त तीनों प्रकार के जैनाभासियों में भी जो भूलें पाई जाती हैं, जिन भूलों की विस्तृत चर्चा इस सातवें अधिकार में की जा रही है; **उन सभी भूलों का एकमात्र कारण निश्चय-व्यवहारनयों का सही स्वरूप नहीं जानना ही है, निश्चय-व्यवहार संबंधी अज्ञान ही है।**

अत: प्रत्येक आत्मार्थी भाई-बहिन को निश्चय-व्यवहार नयों का स्वरूप गहराई से समझने का प्रयास अवश्य करना चाहिए।

उक्त तीनों प्रकार के जैनाभासियों के अतिरिक्त कुछ ऐसे लोग भी होते हैं कि जो नयों के माध्यम से वस्तु का सही स्वरूप समझकर, आत्मसन्मुख होकर सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की साधना कर रहे होते हैं। ऐसे लोगों को पण्डित टोडरमलजी सम्यक्त्व के सन्मुख भद्र मिथ्यादृष्टि कहते हैं।

इसप्रकार हम देखते हैं कि इस सातवें अधिकार में १. निश्चयाभासी, २. व्यवहाराभासी, ३. उभयाभासी और ४. सम्यक्त्व के सन्मुख भद्र मिथ्यादृष्टियों की चर्चा है।

ध्यान रहे ये सभी जैनाभासी दिगम्बर जैनों में ही होते हैं।

निश्चयाभासी मिथ्यादृष्टि

निश्चयाभासी मिथ्यादृष्टि जीवों की वृत्ति और प्रवृति की चर्चा आरंभ करते हुए पण्डितजी लिखते हैं कि **कितने ही जीव निश्चय के सही स्वरूप को न जानते हुए निश्चयाभास के श्रद्धानी होकर स्वयं को मोक्षमार्गी मानते हैं, अपने आत्मा को सिद्ध समान अनुभव करते हैं। यद्यपि स्वयं साक्षात् संसारी हैं, तथापि भ्रम से स्वयं को सिद्ध मानते हैं। उनका यह मानना ही मिथ्यात्व है और वे इसके कारण ही मिथ्यादृष्टि हैं।**

आश्चर्य की बात तो यह है कि उनकी यह मान्यता जिनवाणी का स्वाध्याय करते हुए हुई है। देह में एकत्वबुद्धि के समान उनकी यह मान्यता अनादिकालीन नहीं है, वे इस मान्यता को माँ के पेट से लेकर नहीं आये हैं, उन्होंने यह सब शास्त्रों का स्वाध्याय करके ही सीखा है, नयज्ञान से अनभिज्ञ गुरुओं के समागम से ही सीखा है; अत: यह गृहीत मिथ्यात्व है। यह उनकी इसी भव की कमाई है, इसी भव में जिनवाणी का स्वाध्याय करते हुए स्वयं ही नासमझी से उत्पन्न हुई भूल है।

एक दृष्टि से विचार करें तो ये लोग तो उनसे भी अधिक अभागे हैं; जो कुदेव, कुगुरु और कुशास्त्र के निमित्त से गृहीत मिथ्यादृष्टि बने हैं; क्योंकि इन्हें सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का समागम मिल गया, फिर भी स्वयं की भूल से गृहीत मिथ्यात्व में उलझकर रह गये हैं।

दो भाई आपस में लड़ रहे थे। उनसे पूछा गया कि अरे भाई ! भाई-भाई होकर भी क्यों लड़ रहे हो ?

उन्होंने तपाक से कहा कि इसमें क्या है - भरत और बाहुबली भी तो लड़े थे। अरे भाई ! ये लोग तो लौकिक विषय-सामग्री के लिए लड़नेवाले भाई-बहिनों से भी अधिक अभागे हैं; क्योंकि इन्होंने अपनी लड़ाई का पोषण शास्त्रों के आधार से किया है।

शास्त्रों में लड़ाइयों के दुष्परिणाम बताकर लड़ाई से विरक्त करने के लिए जो कथायें लिखी गई हैं; इन्होंने उन्हीं कथाओं को आधार बनाकर स्वयं की लड़ाई का पोषण किया है।

इसीप्रकार सातवें अधिकार में जिन दिगम्बर जैन गृहीत मिथ्यादृष्टियों का निरूपण है; उनके मिथ्यात्व के निमित्त तो जैनशास्त्रों में समागत कथन हैं। **अपने अज्ञान से इन्होंने सत्शास्त्रों से भी मिथ्यात्व का पोषण किया है। इसप्रकार हम देखते हैं कि ये लोग तो किनारे पर आकर डूबे हैं।**

शास्त्रों में लिखा था कि **'सिद्ध समान सदा पद मेरो'**; पर निश्चयाभासी गृहीत मिथ्यादृष्टियों ने इस कथन की अपेक्षा तो समझी नहीं और अपने को सिद्ध समान मानने लगे तथा कहने लगे कि राग-द्वेषादिक तो हममें हैं ही नहीं, हम तो वर्तमान पर्याय में ही केवलज्ञान से संयुक्त हैं।

अरे, भाई ! यह तो द्रव्यदृष्टि से कहा गया था, आत्मा के द्रव्यस्वभाव के बारे में कहा था; पर इन्होंने वर्तमान पर्याय को भी सिद्धों के समान मान लिया। कहा तो यह गया था कि **जिसप्रकार सिद्ध भगवान पर्याय में पूर्ण**

१. धवला, पु. १, खण्ड १, भाग १, गाथा ६८ २. द्रव्यस्वभावप्रकाशक नयचक्र, गाथा १८१

शुद्ध और केवलज्ञान से परिपूर्ण हैं; उसीप्रकार प्रत्येक आत्मा स्वभाव से तो परिपूर्ण शुद्ध और सर्वज्ञस्वभावी ही है, केवलज्ञानस्वभावी ही है।

सिद्धों का उल्लेख तो मात्र यह बताने के लिए किया गया था कि जिसप्रकार सिद्ध भगवान पर्याय में प्रगट हो गये हैं; उसीप्रकार की निर्मलता एवं पूर्णता तेरे द्रव्यस्वभाव में है। सिद्धों की पर्याय के उदाहरण से संसारी जीवों के स्वभाव अर्थात् द्रव्यस्वभाव को समझाया गया था; **पर इसने सिद्धों की पर्याय के समान ही संसारी जीवों की पर्याय को भी शुद्ध-बुद्ध मान लिया।**

पण्डितजी कहते हैं कि सिद्धों की प्रगट पर्याय से अपने द्रव्यस्वभाव का मिलान करना था; क्योंकि द्रव्यस्वभाव तो उनका और अपना समान ही है। अन्तर तो प्रगट पर्याय में है। पर्याय में वे वीतरागी-सर्वज्ञ हैं और हम रागी-द्वेषी और अल्पज्ञ हैं।

पर्याय की अल्पज्ञता और मलिनता देखकर यह हीनभावना से ग्रस्त हो गया था; अत: यह समझाया था कि तेरा द्रव्यस्वभाव भी सिद्धों के समान शुद्ध-बुद्ध है। सिद्धों की प्रगट पर्याय के माध्यम से द्रव्यस्वभाव को समझाने का प्रयास था; पर इस **निश्चयाभासी जीव ने स्वयं के द्रव्यस्वभाव का तो निर्णय नहीं किया और पर्याय में पामरता, अशुद्धि और अल्पज्ञता के रहते हुए भी, उसे स्वीकार न करके स्वयं को पर्याय में भी शुद्ध-बुद्ध-निरंजन मान लिया।**

निश्चयाभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि की यह सबसे बड़ी भूल है।

जिसप्रकार हम मैले वस्त्र के स्वच्छ स्वभाव को समझाने के लिए, मिलावट वाले सोने के शुद्धस्वभाव को बताने के लिए; साफ कपड़ा और शत-प्रतिशत शुद्ध सोने को दिखाते हैं और यह कहते हैं कि यह मैला कपड़ा या मिलावटी सोना वैसे ही साफ व शुद्ध हैं; जिसप्रकार के साफ कपड़े और शुद्ध सोना है।

यद्यपि यहाँ मलिन पर्याय से संयुक्त आत्मा के शुद्ध स्वभाव को समझाने के लिए सिद्धों की शुद्धपर्याय के माध्यम से प्रयास किया गया है; तथापि जिसप्रकार स्वभाव से शुद्ध होने पर भी मैला वस्त्र पर्याय में तो मैला ही है, स्वभाव से शुद्ध होने पर भी मिलावटी सोना पर्याय में तो अशुद्ध ही है; उसीप्रकार **स्वभाव से शुद्ध होने पर भी संसारी आत्मा पर्याय में तो अभी अल्पज्ञ और रागी-द्वेषी ही है।**

प्रगट पर्याय तो सभी को दिखाई देती है; पर अप्रगट स्वभाव दिखाई नहीं देता। इसकारण सिद्धों की शुद्ध प्रगट पर्याय के माध्यम से अपने शुद्ध स्वभाव को समझाया जाता है।

जिसप्रकार धुले कपड़ों के माध्यम से मैले कपड़ों के साफ स्वभाव को समझना था, शुद्ध सोने के माध्यम से अशुद्ध सोने के स्वरूप को समझना था; उसीप्रकार **सिद्धों के माध्यम से अपने शुद्ध स्वभाव को समझना था; पर इसने जरा सी भूल कर दी और सब कुछ गड़बड़ हो गया।**

कभी-कभी जरा सी गड़बड़ी से भी बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता है।

एक साधु ने एक गृहस्थ को सोना बनाने की विधि बताई। यद्यपि उस गृहस्थ ने उस विधि को पूरी सावधानी के साथ समझा था और पूरी सतर्कता के साथ सोना बनाने का यत्न किया; किन्तु सोना नहीं बन पाया।

वह गृहस्थ फिर उसी साधु के पास गया। साधु ने कहा तुमने कोई न कोई गलती की होगी, अन्यथा सोना अवश्य ही बन जाता। अब तुम मेरे सामने सोना बनाओ, देखें कैसे नहीं बनता ?

गृहस्थ ने सोना बनाना आरंभ किया और नींबू को चाकू से काटकर उसका रस सामग्री में निचोड़ दिया।

साधु ने कहा - ''मैंने कहा था कि साबुत नींबू को हाथ से निचोड़ कर डालना, पर तुमने....।''

गृहस्थ बोला - ''इससे क्या फर्क पड़ता है। नींबू का रस डालना था, सो डाल दिया।''

''अरे, भाई ! लोहे का स्पर्श नहीं होना चाहिए। इसीलिए तो मैंने साबुत नींबू को हथेलियों से निचोड़ कर डालने को बोला था।''

यहाँ भी स्वभाव की सामर्थ्य का परिज्ञान कराने के लिए सिद्धों का उदाहरण दिया था; क्योंकि स्वभाव के आश्रय से पर्याय की पामरता समाप्त होती है, दीनता-हीनता का भाव समाप्त होता है। यही कारण है कि पर्याय में पवित्रता प्रकट करने के लिए स्वभाव का ज्ञान कराया जाता है; पर इसने अपवित्र पर्याय को ही पवित्र मान लिया। कथन का अभिप्राय न समझ पाने के कारण इसप्रकार की भूलें होती हैं।

उक्त कथन को स्पष्ट करते हुए पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि जो मतिज्ञानादि व रागादि अभी पर्याय में हैं; उन्हें तो यह निश्चयाभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि जैन स्वीकार नहीं करता और जो केवलज्ञानादि व वीतरागता पर्याय में अभी नहीं हैं; उन्हें अभी हैं - ऐसा मानता है।

इसका स्पष्टीकरण करते हुए टोडरमलजी स्वयं लिखते हैं -

''शास्त्रों में जो सिद्ध समान आत्मा को कहा है, वह द्रव्यदृष्टि से कहा है, पर्याय अपेक्षा सिद्ध समान नहीं है। जैसे ह्न राजा और रंक मनुष्यपने की अपेक्षा समान हैं; परन्तु राजापने और रंकपने की अपेक्षा से तो समान नहीं हैं; उसीप्रकार सिद्ध और संसारी जीवत्वपने की अपेक्षा समान हैं; परन्तु सिद्धपने और संसारीपने की अपेक्षा समान नहीं हैं, तथापि ये तो जैसे सिद्ध शुद्ध हैं, वैसा ही अपने को शुद्ध मानते हैं; परन्तु वह शुद्ध-अशुद्ध अवस्था पर्याय है; इस पर्याय अपेक्षा समानता मानी जाये तो यही मिथ्यादृष्टि है।

तथा अपने को केवलज्ञानादिक का सद्भाव मानते हैं, परन्तु अपने को तो क्षयोपशमरूप मति-श्रुतादि ज्ञान का सद्भाव है, क्षायिक-भाव तो कर्म का क्षय होने पर होता है और ये भ्रम से कर्म का क्षय हुए बिना ही क्षायिकभाव मानते हैं, सो यही मिथ्यादृष्टि है।[१]''

ध्यान रहे यहाँ मिथ्यादृष्टि में मिथ्या शब्द दृष्टि का विशेषण है, किसी व्यक्ति का नहीं। तात्पर्य यह है कि इसप्रकार की दृष्टि मिथ्या है।

उक्त कथन से यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि राजा और रंक (भिखारी) मनुष्यपने की अपेक्षा समान है; तथापि उनमें जो अमीरी और गरीबी का भेद है, वह तो है ही। उसकी भी उपेक्षा तो नहीं की जा सकती। **(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ-१९३

17 मई 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

हिंगोली में डॉ. भारिल्ल को 'जिनधर्म गौरव'

हिंगोली (महा.) : यहाँ श्री महावीर भवन में दिनाँक १० व ११ अप्रैल को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन तथा सकल हिंगोली समाज द्वारा तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का अभिनन्दन समारोह एवं दो दिवसीय प्रवचन श्रंखला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता स्थानीय विद्वान पण्डित जयकुमारजी दोंडल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री दीपकजी कंदी (कार्यकारी संचालक, गो.म.पाटबंधारे विकास महामंडल), श्री कमलचंदजी परतवार (न्यायाधीश, डेब्ट्स रिकवरी ट्रिब्यूनल मुम्बई), श्री राजेन्द्रजी पाटणी (भूतपूर्व विधायक कारंजा), श्री मिलिंदजी यंबल (उपाध्यक्ष जि.प.हिंगोली) एवं डॉ.अरुणजी दोडल मुम्बई उपस्थित थे।

अतिथिगणों के उद्बोधन के पश्चात् ८०० से १००० लोगों की उपस्थिति में सकल हिंगोली जैन समाज ने डॉ. भारिल्ल को **जिनधर्म गौरव** की उपाधि से अलंकृत किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष पण्डित पद्माकरजी दोडल परिवार ने डॉ.भारिल्ल का शॉल ओढाकर व श्रीफल भेंटकर सम्मान किया। तत्पश्चात् हिंगोली के समस्त दिगम्बर जैनमंदिर कमेटियों के ट्रस्टियों, जैन युवा फैडरेशन के युवा साथियों, रत्न समिति, श्वेताम्बर जैन मंदिर एवं स्थानकवासी संघ ने भी डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया।

सम्मान समारोह में शिरडशहापुर, सेनगाँव, नांदेड, परभणी, वसमत, पुसद, फालेगाँव इत्यादि अनेक नगरों से आये समस्त स्वाध्याय प्रेमियों ने भी डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया। अन्त में मराठवाड़ा एवं विदर्भ प्रांत से पधारे टोडरमल महाविद्यालय के स्नातकों ने अपने गुरु एवं श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का चांदी का रथ धर्मरथ के प्रतीक के रूप में भेंट कर अभिनन्दन किया।

दो दिवसीय आयोजन में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के णमोकार महामंत्र एवं भगवान महावीर की अहिंसा विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित गुलाबचंदजी बोरालकर एलोरा एवं पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

वर्ष २००९ में कोलारस में आयोजित युवा फैडरेशन के महाअधिवेशन में हिंगोली को सर्वश्रेष्ठ शाखा का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। वह प्रशस्ति डॉ. भारिल्ल के करकमलों से फैडरेशन के सदस्यों को दी गई। **ह्न अमोल सिंघई**

दशलक्षण पर्व के संदर्भ में

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु हमारे पास आमंत्रण-पत्र आना प्राप्त हो गये हैं। जो भी अपने जिनमंदिर में विद्वान की व्यवस्था चाहते हैं, वे अपना आमंत्रण-पत्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों को अपनी स्वीकृति भेजने हेतु पत्र भी भेज दिये गये हैं, एतदर्थ विद्वानों से भी निवेदन है कि वे अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें। **ह्न मंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर**

पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ हनुमानगंज स्थित श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला का पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें बालबोध पाठमाला भाग-1,2,3 तथा वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार वितरित किये गये। कक्षा में शत् प्रतिशत उपस्थिति वाले छात्र रोहन को भी पुरस्कृत किया गया। पाठशाला संचालिका श्रीमती सरोजलता तथा श्रीमती पूनम जैन को भी सम्मानित किया गया।

समारोह के अध्यक्ष श्री महेशचंदजी एडवोकेट तथा मुख्य अतिथि श्री वीरेन्द्रजी रेमजा थे। कार्यक्रम का मङ्गलाचरण कुमारी दीक्षा जैन ने किया। **- अनंतवीर शास्त्री**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

16 मई से 2 जून	देवलाली	प्रशिक्षण शिविर व हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 18 जुलाई	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
1 से 10 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर
04 से 11 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
12 से 22 सितम्बर	बड़ौदा	दशलक्षण महापर्व

प्रकाशन तिथि : 13 मई 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127